सहजयोग आज का महायोग

जीवन की जटिलताओं को आसान बनाता है - सहज योग।

जीवन है तो उतार चढ़ाव? आते ही रहेंगे, यही उतार चढ़ाव जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं। कभी कहीं कोई बाधा आये तो उस बाधा से निकलने का दौर सकारात्मक दृष्टिकोण वालों के लिए रोमांचक होता है और बाधा से मुक्त होते ही मिलती है आत्मिक संतुष्टि और जीतने की खुशी।

परंतु सत्य तो यह है कि जीवन में आने वाली इन जटिलताओं को सहजता से लेना तभी संभव होगा जब हम संतुलन में हों। जरा सी तकलीफ होते ही घबरा जाने की प्रवृत्ति हमारी परेशानी को और बढ़ा देती है फलस्वरूप समस्या का समाधान मिलना मुश्किल हो जाता है। आज के दौर में जब समाज व विश्व में अशांति की स्थिति बनी हुई है तब इन? सबसे तटस्थ रह पाना मुश्किल हो जाता है। पर, हमें समाज और विश्व की समस्याओं पर विचार करते हुए भी, उन समस्याओं का हिस्सा होते हुये भी मनस्थिति पर काबू पाने का गुर आना चाहिए। यह आज के दौर की आवश्यकता है। यदि हम स्वयं पर काबू नहीं रख पाते हैं तो स्वयं भी दुखी रहेंगे और परिवार को भी नहीं संभाल पायेंगे। परिवार के सभी सदस्यों को सहज योग विधा को सीखना चाहिए ताकि जीवन के हर पड़ाव पर शांति से रह सकें।

ज्यादातर लोग यह जानते हैं कि परमात्मा का निवास हमारे अंदर है पर इसका अनुभव? नहीं कर पाने से वे असमंजस की स्थिति में रहते हैं। सहज योग की संस्थापिका परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने कुंडलिनी जागरण और ध्यान योग की इस विधा को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया और साधकों को आत्मसाक्षात्कार देकर अपने अंदर की ईश्वरीय शक्ति का आभास कराया। आज लाखों लोग सहज योग के माध्यम से ध्यान करते हुये निश्चिन्त शांतिपूर्ण जीवन जी रहे हैं। 24 सितंबर 1995 के? प्रवचन में श्री माताजी ने कहा कि

'सहज योग से ये सभी छोटी-छोटी समस्याएं आसानी से हल हो सकती हैं। लेकिन एक बात यह है कि आपको एक व्यक्ति के रूप में एकजुट होकर काम करना चाहिए, एक संघ का अभिन्न अंग। और यह भी समझने की कोशिश करें कि आप अपनी समस्याओं को कैसे हल कर सकते हैं... ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनके बारे में आप सोच सकते हैं क्योंकि अब आप आत्मसाक्षात्कारी आत्मा हैं क्योंकि ईश्वर की मदद है और साथ ही आप खुद भी बहुत सतर्क हो गए हैं। '

संघ से श्री माताजी का तात्पर्य सहज योग की समुहिकता से है। भारत व? विदेशों में भी किये गये चिकित्सा शोध ने यह दर्शाया है कि सहज योग के माध्यम से शारीरिक और मनोदैहिक रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। हम परमात्मा से जुड़े बिना अपने जीवन का अर्थ नहीं जान सकते हैं। ??जैसे ही हमें अपने जीवन का अर्थ समझ में आ जायेगा, हमारे जीवन में पूर्णकालिक वसंत का प्रवेश हो जायेगा। हर जटिलता को सही समाधान मिलेगा।

चलिये सहज योग से जुड़ते हैं। सहज योग निशुल्क भी है और आसान? भी सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी टोल फ्री नंबर 1800 2700 800 अथवा यूट्यूब चैनल लर्निंग सहजयोगा से प्राप्त कर सकते हैं।

दर्पण
सुनील शर्मा,
टार्गेट नगर इंदौर
+91 99260 20094

मैं नहीं, हम

आज का समय 'मैं' से शुरू होकर 'मैं' पर ही समाप्त हो जाना चाहता है, जबकि समाज की नींव 'हम' से रखी जाती है। व्यक्तिगत सफलता, व्यक्तिगत पहचान और व्यक्तिगत उपलब्धियों की दौड़ में हम यह भूलते जा रहे हैं कि हमारा अस्तित्व अकेले नहीं, सामूहिकता से जुड़ा है। 'मैं' की सोच हमें आगे बढ़ने का भ्रम तो देती है, पर टिके रहने की क्षमता 'हम' वाली सोच ही प्रदान करती है। जब व्यक्ति केवल अपने लाभ, अपने अधिकार और अपनी सुविधा के बारे में सोचता है, तब समाज बिखरता है, संबंध कमजोर पड़ते हैं और संवेदनशीलता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। इसके विपरीत, 'हम' की सोच हमें यह सिखाती है कि मेरा भला तभी सुरक्षित है, जब आसपास का भला भी सुरक्षित हो। परिवार से लेकर कार्यस्थल तक, और समाज से लेकर राष्ट्र तक, हर जगह 'हम' की भावना ही सहयोग, विश्वास और संतुलन को जन्म देती है। आज हम अधिकारों की बात बहुत करते हैं, पर कर्तव्यों की चर्चा से बचते हैं, जबकि 'हम' की सोच कर्तव्यों से ही आकार लेती है। जब हम कहते हैं कि यह मेरी समस्या नहीं है, वहीं से सामाजिक पतन की शुरुआत होती है, और जब हम कहते हैं कि यह हमारी जिम्मेदारी है, वहीं से समाधान का रास्ता निकलता है। 'हम' वाली सोच व्यक्ति को छोटा नहीं बनाती, बल्कि उसे व्यापक बनाती है, क्योंकि उसमें दूसरों की पीड़ा को समझने की क्षमता होती है। यह सोच प्रतिस्पर्धा को समाप्त नहीं करती, बल्कि उसे स्वस्थ दिशा देती है, जहाँ आगे बढ़ते हुए भी पीछे छूटे लोगों की चिंता बनी रहती है। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों ने 'हम' को प्राथमिकता दी, वे संकट में भी एकजुट रहे, और जिन्होंने केवल 'मैं' को महत्व दिया, वे सुविधाओं के बीच भी अकेले पड़ गए। व्यक्ति जितनी जल्दी यह समझ लेता है कि उसका विकास दूसरों के विकास से जुड़ा है, उतनी ही जल्दी समाज स्वस्थ दिशा में बढ़ने लगता है। विशेषः 'मैं' से पहचान मिलती है, पर 'हम' से भविष्य बनता है; सामाजिक संतुलन के लिए 'हम' वाली सोच अनिवार्य है।

जरूरतमंदों तक पहुंचे योजनाएं

महोदय,

हाल ही में वित्त मंत्री सीतारमण ने वार्षिक बजट पेश किया है जिसमें कहीं उम्मीद है तो कही इंतजार भी नजर आता है। वास्तव में देखा जाए तो बजट की सफलता पूरी तरह से उसके क्रियान्वयन की ईमानदारी और प्रशासनिक कुशलता पर टिकी होती है। अक्सर नीतिगत घोषणाएं फाइलों और दफ्तरों की लंबी प्रक्रिया में अपनी चमक खो देती हैं जिससे आम आदमी के भीतर एक प्रकार की उदासीनता जन्म लेने लगती है। सब्सिडी या सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान है अवश्य कारगर मगर जब वे कागजों पर ही नजर आते हैं तो न लोगों के जीवन स्तर में सुधार आता है और न ही योजनाएं अपना मकसद हासिल कर पाती है।इसके लिए भ्रष्टाचार मुक्त वितरण प्रणाली और धरातल पर सक्रिय निगरानी बहुत जरूरी है। वास्तव में बजट एक शक्तिशाली साधन है बशर्ते इसे संकल्प और पारदर्शिता के साथ लागू किया जाए तो वह निश्चित रूप से सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का आधार बन सकता है।

अमृतलाल मारू 'रवि'
इन्दौर मप्र

घर का वास्तु किस पर अधिक प्रभाव डालता है: गृहस्वामी, परिवार या किराएदार

यह प्रश्न आज लगभग हर उस परिवार के मन में उठता है, जहाँ एक ही घर में रहते हुए लोगों के अनुभव, स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति और जीवन की गति अलग-अलग दिखाई देती है। कोई व्यक्ति उसी वातावरण में प्रगति करता है, जबकि दूसरा तनाव, अस्थिरता या अवरोध का अनुभव करता है। ऐसे में स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि क्या घर का वास्तु सबसे अधिक प्रभाव उसके मालिक पर डालता है, या उसमें रहने वाले अन्य परिवारजनों पर भी उतना ही असर करता है। और यदि कोई व्यक्ति उस घर में किराएदार के रूप में रह रहा हो, तो क्या उस पर भी वही वास्तु प्रभाव लागू होते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर केवल वास्तु शास्त्र में नहीं, न ही केवल ज्योतिष में सीमित है। इसका समाधान भारतीय शास्त्रीय परंपरा के उस समन्वित दृष्टिकोण में निहित है, जहाँ स्थान, व्यक्ति और कर्म–तीनों को एक साथ देखा गया है।

वास्तु शास्त्र के अनुसार कोई भी घर केवल ईंट, पत्थर और सीमेंट की संरचना नहीं होता, बल्कि वह पंचमहाभूतों–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश–का एक जीवंत ऊर्जा-क्षेत्र होता है। दिशाएँ इन तत्वों की वाहक हैं और भवन का विन्यास यह निर्धारित करता है कि कौन-सी ऊर्जा किस रूप में प्रवाहित होगी। यह ऊर्जा घर में रहने वाले सभी लोगों को समान रूप से उपलब्ध होती है, ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य का प्रकाश आंगन में खड़े सभी व्यक्तियों पर पड़ता है।

परंतु यहाँ एक सूक्ष्म भेद समझना आवश्यक है। सूर्य का प्रकाश सब पर समान पड़ता है, लेकिन उसका प्रभाव सब पर समान नहीं होता। किसी की आँखें संवेदनशील होती हैं, किसी की दृष्टि मजबूत। यही सिद्धांत वास्तु और कुंडली के संबंध में भी लागू होता है।

शास्त्रों में गृहस्वामी को वास्तु फल का प्रमुख भोक्ता माना गया है। मयमतम् और मानसार जैसे वास्तु ग्रंथों में यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि जो व्यक्ति भूमि का चयन करता है, निर्माण का संकल्प लेता है और भवन का स्वामी होता है, वही उसके वास्तु फल का मुख्य अनुभवकर्ता बनता है। इसका कारण केवल कानूनी स्वामित्व नहीं, बल्कि वह चेतना है, जिसके साथ घर का निर्माण और उपयोग आरंभ हुआ। घर में निहित ऊर्जा सबसे पहले उसी चेतना से टकराती है।

ज्योतिष की भाषा में कहें तो गृहस्वामी की कुंडली का चतुर्थ भाव, उसका स्वामी ग्रह और भूमि कारक मंगल उस घर के साथ सीधे जुड़ जाते हैं। यदि इन ग्रहों पर शुभ प्रभाव हों, तो घर का वास्तु सहायक बन जाता है। यदि ये ग्रह दुर्बल हों या प्रतिकूल दशा में हों, तो वही घर व्यक्ति को अधिक बोझिल अनुभव हो सकता है। इसलिए कहा जाता है कि घर का वास्तु सबसे पहले और सबसे गहरे स्तर पर गृहस्वामी की कुंडली से संवाद करता है।

परिवार के अन्य सदस्यों पर वास्तु का प्रभाव इससे अलग ढंग से कार्य करता है। वे उस घर के निर्माता या स्वामी नहीं होते, परंतु उस ऊर्जा-क्षेत्र में निवास करने के कारण उससे प्रभावित अवश्य होते हैं। यहाँ निर्णायक भूमिका उनकी जन्म कुंडली निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति अलग लग्न, अलग ग्रह स्थिति और अलग कर्म-संस्कार लेकर आता है। इसलिए एक ही वास्तु किसी के लिए सहायक सिद्ध होता है, किसी के लिए तटस्थ रहता है और किसी के लिए चुनौती बन सकता है।

बृहत् पराशर होरा शास्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि किसी भी फल का निर्धारण देश, काल और पात्र के आधार पर होता है। यहाँ देश और स्थान का प्रतिनिधित्व वास्तु करता है, काल का प्रतिनिधित्व ग्रह दशाएँ करती हैं और पात्र व्यक्ति की कुंडली है। जब इन तीनों का मेल होता है, तभी अनुभव आकार लेता है।

उदाहरण के रूप में यदि किसी घर का ईशान कोण कमजोर हो, तो उस घर में मानसिक शांति और स्पष्टता से संबंधित ऊर्जा प्रभावित होगी। जिस व्यक्ति की कुंडली में चंद्र या गुरु पहले से ही दुर्बल हों, वह इस असंतुलन को अधिक तीव्रता से अनुभव करेगा। वहीं जिसकी कुंडली में ये ग्रह सशक्त हों, वह उसी वातावरण में रहते हुए भी संतुलन बनाए रख सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि वास्तु सब पर समान रूप से कार्य करता है, पर उसका फल समान नहीं होता।

अब प्रश्न उठता है कि किराएदार पर वास्तु का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। शास्त्रीय दृष्टि से किराएदार की स्थिति गृहस्वामी और परिवार से भिन्न होती है। वह न तो भूमि का चयन करता है, न निर्माण का संकल्प लेता है और न ही भवन के स्थायी विन्यास में उसकी भूमिका होती है। इसलिए उस पर वास्तु का प्रभाव भी सीमित और अस्थायी माना गया है। गरुड़ पुराण में निवास-स्थान को कर्मफल के अनुभव का माध्यम बताया गया है, न कि उसका मूल कारण। इसका अर्थ यह है कि घर वह मंच है, जहाँ व्यक्ति अपने पूर्व और वर्तमान कर्मों का फल अनुभव करता है। किराएदार के लिए यह मंच अस्थायी होता है, इसलिए उस पर दीर्घकालिक और गहरे वास्तु प्रभाव सामान्यतः नहीं देखे जाते।

हाँ, यह अवश्य है कि किराएदार पर वास्तु का प्रभाव मुख्यतः मानसिक स्थिति, नींद, कार्यक्षमता और आपसी संबंधों के स्तर पर दिखाई देता है। यदि व्यक्ति की ग्रह दशा संवेदनशील हो, विशेषकर चंद्र, शनि या राहु से जुड़ी हुई, तो वही वातावरण उसे अधिक भारी लग सकता है। परंतु जैसे ही दशा बदलती है या स्थान परिवर्तन होता है, प्रभाव भी क्षीण हो जाता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि वास्तु का प्रभाव पूरे घर से अधिक व्यक्ति के उपयोग-क्षेत्र से आता है। व्यक्ति किस दिशा में सोता है, किस दिशा में बैठकर काम करता है और किस स्थान पर अधिक समय बिताता है–ये सभी तत्व वास्तु अनुभव को गहराई देते हैं। इसलिए कई बार छोटे-छोटे समायोजन, बिना पूरे घर को बदले, व्यक्ति-विशेष के लिए पर्याप्त सिद्ध हो जाते हैं।भगवद्गीता इस पूरे विषय को कर्म के केंद्र में रखकर स्पष्ट करती है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य अपने कर्मों से बँधा है और कर्म ही उसके अनुभवों का मूल कारण है। जब वास्तु को कर्म से बड़ा मान लिया जाता है, तभी भय और भ्रम उत्पन्न होता है। वास्तव में वास्तु मार्गदर्शक है, निर्णायक नहीं।

अंततः निष्कर्ष यही है कि घर का वास्तु सबसे गहरे और दीर्घकालिक रूप से गृहस्वामी पर प्रभाव डालता है। परिवार के अन्य सदस्य अपनी-अपनी कुंडली के अनुसार उस प्रभाव को ग्रहण करते हैं, जबकि किराएदार पर उसका प्रभाव सीमित, अस्थायी और अनुभवजन्य होता है। वास्तु किसी को दंड देने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि जीवन-ऊर्जा का संतुलन बताने वाला विज्ञान है।

यदि वास्तु को सही संदर्भ में, ज्योतिष और कर्म सिद्धांत के साथ समझा जाए, तो वह भय का कारण नहीं, बल्कि विवेक और संतुलन का माध्यम बन जाता है।

डॉ. महेंद्र सिंह गोले

पता नहीं क्यों

पता नहीं क्यों? आज - कल वो भ्रम की दुनिया में जी रहा है उसे लगता है कि वो मुझे झूठ कहानियों से अपने प्यार के जाल में फंसा लेगा। शायद वो इस बात को समझता नहीं कि प्यार, बस हो जाता है। इसके लिए कोई योजनाएं नहीं बनाई जाती हैं और ना ही झूठी कहानियों का सहारा लेना पड़ता है। प्यार एहसास है जो बस एक झलक में हो जाता है और प्यार में मिलन हो ये जरूरी नहीं होता है अक्सर सच्ची मोहब्बत भी अधूरी ही होती है। लेकिन मुझे ये नहीं समझ आ रहा कि जो कल तक मुझसे बात नहीं करता है अचानक से इतना बात क्यों कर रहा है। मदद के नाम पर मुझसे हर काम करवा रहा है और हर दिन नई कहानियों का सहारा ले रहा है। शायद मैं भोली - भाली हूं और वो चालाक है तभी तो, मै हर बात को सच मानकर करती गई और उसके जाल में फंसती रही। वो हर बार बड़े आसानी से कहानियां सुनाता और मैं सच मानकर सुनती जाती। अब तो मुझे लगता है कि शायद हो सकता है कि उसको हमसे कोई दुश्मनी होगा तभी तो वो किसी साजिश के तहत् जाल बिछाकर मुझे पटाने का कोशिश कर रहा है लेकिन मैं उनके जाल में कभी फंसूंगी नहीं। ये जानते हुए भी वो हर रोज न२ई कहानियां सुनाता है आखिर वो क्या चाहता है? मैं तो निस्वार्थ भाव से समाज सेवा कर रही हैं लेकिन वो मेरे द्वारा किए गए हर सेवा का मेवा खा रहा था और क़िस्मत भी क्या जब की होती हैं ना। जहां एक तरफ मुझे झूठी कहानियों के जाल में फंसाने का प्रयास छोटा भाई कर रहा था वही पर बड़े भाई ने सच बता दिया। कि बहन तुम जिसके लिए काम कर रही हो, वो मुखौटा राम का लगाया है लेकिन असली में वो रावण है और इस दिखावटी दुनिया में वो भी दिखावे के लिए एक साजिश को बुन रहा है। तुम गलत मत समझना वो बहुत भोला है लेकिन दिखावटी दुनिया ने उसे बिगाड़ दिया है और सच ये भी है कि पहले वो तुम्हें, अपने फायदे के लिए फटा रहा था लेकिन अब वो सच में तुमसे प्यार करता है। मानता हूँ कि उसने झूठी कहानियों से तुम्हें फंसाया लेकिन सच कहूँ तो उसने दिल से तुमको अपनाया है। इतना सुनते हुए मैं भी सोच में पड़ गई क्योंकि नंबर उसके पास काफी दिनों से था लेकिन उसने कभी मैसेज नहीं किया और अचानक उसका लगातार मुझसे

बातें करना, मुझे भी पसंद तो आ ही रहा था कुछ तो खास बात है उसके कहानियों में, जो मुझे उसके ओर खीची जा रही थी। मन में मस्त प्रश्नों की खिचड़ी तैयार मैं कर रही थी लेकिन सुबह सच का पता चल गया कि वो बस दोस्तों को देखाने के लिए मुझे पटाना चाहता था। पता नहीं क्यों, ये लड़के समझते नहीं है कि हम लड़कियाँ भी इंसान है हमें बहुत दुःख होता है जब कोई हमें छलता है। क्या कभी लड़कों के साथ ऐसा हुआ होगा क्या, पता नहीं

मुस्कान केशरी
सम्पर्क करें 6203124315

बजट 2026 विकसित होते भारत की और एक कदम

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का लगातार नौवां बजट निरंतरता और नवाचार' का एक सटीक संतुलन पेश करता है।यह बजट2026 विकसित होते भारत की और एक सधा हुआ कदम है 12.2 लाख करोड़ रुपये का भारी भरकम पूंजीगत व्यय बुनियादी ढांचे और रोजगार सृजन को नई रफ्तार देगा।मध्यम वर्ग के लिए आयकर स्लैब में बदलाव न होना थोड़ा निराशाजनक है, लेकिन कैंसर की दवा पर सीमा शुल्क माफी एक बड़ी राहत है।7 नए हाई स्पीड और डिजिटल कृषि के लिए 'भारत-विस्तार' प्लेटफॉर्म कनेक्टिविटी और आधुनिकता के प्रतीक हैंएम एस एम ई क्षेत्र के लिए 10,000 करोड़ का ग्रोथ फंड और कॉर्पोरेट मित्र योजना छोटे उद्योगों की राह आसान करेगी। महिला सशक्तिकरण के लिए हर जिले में बालिका छात्रावास और शी मार्ट्स की घोषणा सामाजिक समावेश की दिशा में ठोस प्रयास है।4.3% राजकोषीय घाटा लक्ष्य यह दर्शाता है कि सरकार विकास के साथ-साथ आर्थिक अनुशासन को लेकर भी गंभीर है।कुल मिलाकर, यह बजट लोकलुभावन घोषणाओं के बजाय अमृत काल के दीर्घकालिक लक्ष्यों को साधने वाला विजन डॉक्यूमेंट है।

भगवानदास छारिया 15 सोमानी नगर इंदौर

रक्षा पर जोर रोजगार भाव विभोर

'रक्षा बजट को 6.81 लाख करोड़ से बढ़ाकर 7.85 लाख करोड़ याने 15.2% की वृद्धि करके देश की सुरक्षा पर ध्यान दिया गया. महिलाओं को ''शी-स्मार्ट'' दुकानों के जरिये स्वरोजगार समूह को बढ़ावा दिया गया है. मिडिल क्लास के लिए न तो आयकर में कोई नई छूट का प्रावधान रखा गया और न ही गरीब/मजदूरों के हित अथवा महंगाई से राहत के लिए कोई ऐसा कदम उठाया गया जिससे उन्हें सुकून मिल सके. देश के उत्थान में युवकों का सबसे बड़ा योगदान होता है किन्तु बेरोजगारी कम करने के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं की गई है जिससे उन्हें बेहतर नौकरी या रोजगार मिल सके. माना कि विदेश में पढ़ाई व इलाज के लिए धन भेजने पर राहत दी गई है किन्तु देश में महंगी होती शिक्षा व इलाज में राहत हेतु व्यवस्था नहीं की गई। आयुर्वेदिक व मेडिकल हब बनाने के लिए किये गए प्रावधानअच्छी बात है. सर्व स्पीड रेलमार्ग व सर्वसुविधायुक्त नई रेलें चलाने पर जोर देना और भी अच्छी बात है किन्तु आम यात्रियों को सुविधाजनक ट्रेनें मुहैया कराने/बढ़ाने हेतु जो कि अति आवश्यक है के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया है. हालांकि विपक्ष को सत्ता के प्रावधान कभी भाते ही नहीं हैं फिर चाहे वे जनहितैषी ही क्यों न हो. तब उन्होंने बजट को कोई बेस न कोई विजन और न ही कोई फेस निरूपित किया है. लेकिन ये बात सही है कि इस बार का बजट किसी भी वर्ग को बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं कर पाया है. तभी तो शेयर बाजार लुड़क गया. अब भले ही बजट की धमक हो या अंतर्राष्ट्रीय बाजार की उठा-पटक किन्तु आसमान में उड़ते सोना-चांदी के भाव बहुत ही तेजी से जमीन की और आने लग गए और सम्भव है आगे और भी नीचे आ सकते हैं. वैसे कुल मिलाकर 2026-27 का वित्तमंत्री 'निर्मला सीतारमण'' द्वारा प्रस्तुत बजट सभी की के लिए उनकी आर्थिक दृष्टि में न तो ''निर्मल'' रहा और न ही बहुत ज्याद ''सबल' ही रहा... **शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर**

शॉर्टकट के चक्कर में ना उलझें विद्यार्थी

हर वर्ष फरवरी एवं मार्च के महीने विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। क्योंकि यह परीक्षार्थियों के लिए इम्तहान का वक्त होता है। विद्यार्थियों के लिए परीक्षा के तनाव से बचने का सबसे महत्वपूर्ण उपाय है कि पूरे सत्र वे अध्ययन से अपना नाता बनाये रखें। शॉर्टकट एवं आयएमपी के चक्कर में ना उलझें। शिक्षकों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को परीक्षा के खौफ से उबारने का प्रयास करें। अनावश्यक भ्रम में उलझाने की बजाय उनका उचित मार्गदर्शन करें। पेरेंट्स बच्चों को घर पर अध्ययन हेतु उचित माहौल प्रदान करें। उनके आहार विहार और दिनचर्या का ध्यान रखें। स्कूलों में तनाव मुक्त एवं सहज वातावरण में परीक्षा संपन्न होना चाहिये। परीक्षा पूरे शैक्षणिक सत्र के अध्यापन कार्य पर आधारित होती हैं। अतः उसकी तैयारी के लिए पूरे सत्र में विद्यार्थियों को टाइम टेबल निश्चित करके उस अनुसार तैयारी करना चाहिए।

ललित महालकरी इंदौर

थाईलैंड में इंसानियत की मिसाल

थाईलैंड की एक साधारण सड़क, जहाँ ट्रैफिक का शोर हमेशा गूँजता रहता है, एक दिन जीवन की सबसे सुंदर ध्वनि का गवाह बन गई। यह केवल एक खबर नहीं थी, बल्कि पूरी दुनिया के दिलों को जोड़ने वाला वह पल था, जिसने साबित कर दिया कि इंसानियत आज भी जिंदा है। अस्पताल पहुँचने से पहले ही, तेज़ ट्रैफिक के बीच एक चलती गाड़ी में एक बच्चे ने जन्म ले लिया। कुछ ही सेकंडों में वह सड़क एक साधारण रास्ते से बदलकर उम्मीद और संवेदना का जीवंत मंच बन गई। यह घटना न केवल थाईलैंड की व्यस्त सड़कों की कहानी है, बल्कि मानवता की उस शक्ति का प्रतीक है जो विपत्ति में भी प्रकाश फैला देती है।कल्पना कीजिए उस दृश्य को–बैंकॉक या अयुत्थाया जैसी जगह पर, जहाँ कारें, स्कूटर और ट्रक लगातार दौड़ते रहते हैं। एक गर्भवती महिला, अपनी माँ या पति के साथ कार में सवार, अस्पताल की ओर जा रही है। अचानक प्रसव पीड़ा इतनी तीव्र हो जाती है कि रुकना ही एकमात्र विकल्प बचता है। गाड़ी सड़क के किनारे रुकती है, और डरावनी चीखें हवा में गूँजने लगती हैं। आसपास के वाहन रुकते हैं, हॉर्न की कर्कश आवाज़ें धीरे-धीरे शांत हो जाती हैं। पहले तो लोग समझ ही नहीं पाते कि क्या हो रहा है, लेकिन जैसे ही खबर फैलती है– 'डिलीवरी हो रही है!'–एक चमत्कार घटित हो जाता है। हर दिशा से लोग दौड़ पड़ते हैं। कोई अजनबी चालक पानी की बोतल थमा देता है, कोई दुपहिया सवार साफ़ कपड़ा लाकर देता है, तो कोई बस खड़ा होकर प्रार्थना करता है। ट्रैफिक जाम, जो हमेशा अभिशाप लगता है, इस पल सुरक्षा की एक चादर बन जाता है।

माँ का चेहरा–वह घबराहट, दर्द और अनिश्चितता से भरा होता है। पसीने से तर, आँसुओं से भीगा, वह हर पल सोच रही होती है कि क्या सब ठीक होगा। लेकिन फिर वह क्षण आता है जब बच्चे की पहली किलकारी हवा में गूँजती है। रोने की वह मधुर ध्वनि न केवल माँ के कानों तक पहुँचती है, बल्कि हर मौजूद इंसान के दिल को छू जाती है। चेहरा बदल जाता है–डर के बादल छँट जाते हैं, और खुशी के आँसू बहने लगते हैं। ममता की वह विजय होती है जहाँ आँसू तकलीफ के नहीं, जीवन की जीत के प्रतीक बन जाते हैं। अजनबी लोग अब अजनबी नहीं रहते; वे एक बड़े परिवार का हिस्सा बन जाते हैं। कोई बच्चे को गोद में लेता है, कोई नाभि नाल काटने में मदद करता है, तो कोई एम्बुलेंस को फोन कर तुरंत बुला लेता है। यह दृश्य कैमरों में कैद होता है, लेकिन इसका असर शब्दों से परे होता है–यह महसूस करने वाला होता है।

थाईलैंड में ऐसी घटनाएँ असामान्य नहीं हैं। देश की घनी आबादी और भयानक ट्रैफिक जाम अक्सर ऐसी अप्रत्याशित स्थितियों को जन्म देते हैं। कुछ वर्ष पहले अयुत्थाया में एक महिला ने पिकअप ट्रक के पीछे बच्चे को जन्म दिया था। ट्रैफिक पुलिस और स्थानीय लोग इकट्ठा हो गए, और बच्चा सुरक्षित पैदा हुआ। इसी तरह, बैंकॉक की सड़कों पर ट्रैफिक पुलिस अधिकारी अक्सर फँसी गर्भवती महिलाओं की डिलीवरी में मदद करते हैं। एक अधिकारी ने तो 47 से अधिक बच्चों को सड़क पर ही जन्म दिया है। ये कहानियाँ थाई संस्कृति की गहराई को दर्शाती हैं, जहाँ बौद्ध धर्म की करुणा और सामुदायिक भावना हर कदम पर झलकती है। थाईलैंड में 'सनुक' या सामूहिक सहायता की परंपरा इतनी मजबूत है कि विपदा में हर कोई अपना मान लेता है।

भारत के संदर्भ में देखें तो यह घटना और भी प्रासंगिक हो जाती है। दिल्ली की सड़कों पर ट्रैफिक जाम रोज़ की बात है। क्या होगा अगर यहाँ ऐसी स्थिति बने? हमारे यहाँ भी 'अतिथि देवो भवः' की भावना है, लेकिन अक्सर भीड़ में व्यक्तिगत जिम्मेदारी कम हो जाती है। थाईलैंड की यह घटना हमें झकझोरती है–ट्रैफिक सिग्नल पर अगली बार फोन देखने के बजाय, आसपास देखें। शायद कोई मदद माँग रहा हो। बॉलीवुड की फिल्मों में भी ऐसी कहानियाँ हैं, जैसे 'रंगीला' या 'मर्द' में सड़क पर जन्म लेने वाले बच्चे, लेकिन वास्तविक जीवन इससे कहीं अधिक प्रभावशाली है।

इस घटना का एक वर्ष बाद का प्रभाव देखें। वह बच्चा अब मासूम कदम उठा रहा होगा, माँ गर्व से उसकी कहानी सुना रही होगी। सोशल मीडिया पर फॉलो-अप आया–परिवार ने थैंक्यू पोस्ट किया, जिसमें सभी मददगारों को याद किया। यह साबित करता है कि अच्छाई कभी व्यर्थ नहीं जाती। दुनिया तेजी से बदल रही है–एआई, रोबोट, स्वचालित कारें–लेकिन मानवीय स्पर्श की जगह कोई नहीं ले सकता। थाईलैंड की यह सड़क हमें सिखाती है कि जीवन कभी भी, कहीं भी आ सकता है, और अगर इंसानियत साथ हो, तो हर रास्ता अस्पताल बन जाता है।समय कभी-कभी खुद रुक जाता है ऐसे पलों में। दुनिया की भागमभाग में, यह चमत्कार हमें रोकता है और सोचने को मजबूर करता है–हम कितने भाग्यशाली हैं कि इंसान बने। यह कहानी नई पीढ़ी को सुनानी चाहिए, ताकि इंसानियत की लौ कभी न बुझे। थाईलैंड की उस सड़क ने न केवल एक बच्चे को जन्म दिया, बल्कि लाखों दिलों में आशा का बीज बो दिया।

- महेन्द्र तिवारी
मोबाइल: 9989703240,
ईमेल: mahendra-tone@gmail.com